بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद[सo] अल्लाह के रसूल हैं।

Vol - 27
Issue - 03

राह-ए-ईमान

मार्च
2025 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण

विषय सूची

1. पवित्र क़ुरआन..... 2
2. पवित्र हदीस 2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी..... 3
4. रूहानी ख़ज़ायन (इत्मामुल हुज्जत).....4
5. सम्पादकीय 6
6. सारांश ख़ुत्बः जुम्अः (दिनांक 03-01-2025).....8
7. क़ुर्आन और हदीस से मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलीलें.....12
8. इस्लाम में जंग का कारण; धर्म का प्रसार या आत्म-रक्षा ?.....25
9. सामान्य ज्ञान.....30

☆ ☆ ☆

सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.
इब्नुल मेहदी लईक M.A.
संपादक - मंडल
फज़ल नासिर
सेटिंग
फ़रहत अहमद आचार्य
टाइटल डिज़ाइन
नूरुद्दीन नूरी
मैनेजर
अतहर अहमद शमीम M.A.
कार्यालय प्रभार
सय्यद हारिस अहमद

पत्र व्यवहार के लिए पता :-
सम्पादक राह-ए-ईमान, मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क़ादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।
Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,
Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)
Fax No. 01872 - 220139, **Email : rahe.imaan@gmail.com**
Editor- 9115040806, Manager- 9815639670

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspour 143516 Punjab iNDIA. Editor Farhat Ahmad

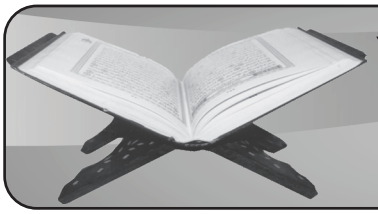

पवित्र क़ुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

क़ुरआन की आयत का अनुवाद:- 36-हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह के लिए संयम धारण करो और उस का क़ुर्ब (निकटता) हासिल करने अर्थात् उस तक पहुँचने की राहों को तलाश करो तथा उस की राह में कोशिश करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

37-जो लोग इन्कार करने वाले हैं यदि धरती में जो कुछ पाया जाता है वह सब और उतना ही उस के साथ और (धन) भी उन के पास होता कि वे क़ियामत के दिन के अज़ाब के बदले में उसे दे देते तो भी उन से स्वीकार नहीं किया जाता और उन के लिए पीड़ा-दायक अज़ाब निश्चित है।

38-वे नरक की आग से निकलना चाहेंगे, परन्तु उस में से कदापि निकाल नहीं सकेंगे और उन के लिए न टलने वाला अज़ाब निश्चित है। (सूरह अल माइदा-36से38तक)

पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

हदीस का अनुवाद: हज़रत हफस बिन आसिम बताते हैं कि मैं अपने चाचा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ मक्का के सफर में था। रास्ते में उन्होंने नमाज़ ज़ुहर दो रकअत पढ़ाई इस के बाद वह अपने निवास स्थान पर आए और बैठ गए हम भी आपके साथ आकर बैठ गए। आपने उस तरफ देखा जिधर नमाज़ पढ़ाई थी। आपने देखा कि कुछ लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं। आपने पूछा ये लोग क्या कर रहे हैं? मैंने कहा सुन्नतें पढ़ रहे हैं। आपने फरमाया अगर सुन्नतें पढ़नी थीं तो मैं पूरी नमाज़ पढ़ाता। ए भतीजे! मैं रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर कर रहा हूँ आप ने अपनी वफात तक सफर में दो रकअत फ़र्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। मैं अबू बकर के साथ सफर में रहा हूँ उन्होंने भी कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी जब तक कि वह फौत हो गए। उमर के साथ सफर करता रहा हूँ आपने भी अपनी वफात तक कभी दो रकअत फर्ज़ से अधिक नमाज़ नहीं पढ़ी। फिर उसमान के साथ सफर करता रहा हूँ उन्होंने भी अपनी वफात तक इसी पर अमल किया। अल्लाह तआला का इरशाद है कि तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के व्यवहार में अच्छा नमूना है। (और यही सुन्नत है जिसका हर मुसलमान को पालन करना चाहिए) (मुस्लिम किताबुस्सलात)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

इस्लाम की क़द्र करो

मैं फिर असल मतलब की ओर लौटकर कहता हूँ कि इस समय इस्लाम की जो हालत हो रही है, और ये भिन्न-भिन्न धार्मिक गुटबन्दियाँ जो हर दिन बनती रहती हैं, और मुख़ालिफ़ इस पर दुस्साहस दिखा रहे हैं, और धृष्टता से हमले और ऐतराज़ करते हैं। यह सब इसी दाब्बतुल् अर्ज़ (मूर्ख मुल्लाओं) का रचा हुआ फ़साद है। इन्होंने ही ईसाइयों को मदद दी है। मगर अब ख़ुदा का शुक्र करो कि उसने ठीक समय पर मार्गदर्शन किया है और इस सिलसिला (जमाअत) को खड़ा किया है। इसलिए तुम्हें उचित है कि इस फ़ज़्ल (उपकार) को जो तुम्हें दिया गया है नष्ट न करो और अदब की नज़र से देखो और इस मदद और सहायता की जो तुम्हें दी गई है क़द्र करो। नि:सन्देह याद रखो कि ख़ुदा की मदद के बिना और उसके बोलाए बिना कोई व्यक्ति पूरी सच्चाई से और पूरी ताक़त से इस विषय को बयान नहीं कर सकता। उसकी सहायता के बिना प्रमाण मिलते ही नहीं और न ही वर्णनशैली दी जाती है। और यह भी ख़ुदा का फ़ज़्ल (कृपा) होता है कि इस वर्णनशैली से सदाचार की शक्ति रखने वाले उस व्यक्ति को जो ख़ुदा से शक्ति और सामर्थ्य पाकर उसके आदेश से बोलता है, पहचान लेते हैं। अत: तुम पर यह ख़ुदा तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि उसने तुम्हें यह शक्ति दी और पहचानने वाली आँख दी। यदि वह यह फ़ज़्ल (उपकार) न करता तो जैसे दूसरे लोग रूढ़िवादी विचारों और अन्धकारों में पड़े हैं और गालियाँ देते हैं, तुम भी उन में ही होते। जिस चीज़ ने तुम्हें खींचा है वह केवल ख़ुदा का फ़ज़्ल (कृपा) है। जैसे मियाँ अब्दुल हक़ ही को देखो कि यदि ख़ुदा का उपकार उन पर न होता तो वह उस ऐशो आराम की जगह से कैसे निकल सकते थे, विशेषकर ऐसी हालत में कि उनके पास कई नसीहत करने वाले भी जमा हुए और उन्होंने मना भी किया कि क़ादियान मत जाओ। बल्कि एक ने गाली भी दी, हालाँकि गाली देना उनके मज़हब में मना है और आमतौर पर सभ्यता और शालीनता के भी विपरीत है, लेकिन उन सब बातों पर ख़ुदा का फ़ज़्ल ग़ालिब आ गया और उनको खींच लाया। उनको नुकसान और बुराई के कारण ही न मिल पाए। वर्ना अगर यह शादी कर लेते तो फिर एक बड़ी आज़माइश में पड़ जाते। मगर ख़ुदा ने हर तरह से बचाया। ख़ुदा का फ़ज़्ल दिखावटी और मनगढ़त नहीं होता। जिस पर वह अपना फ़ज़्ल करता है उसे हर तरह से बचा लेता है। केवल इतना ही मत कहो कि हम मुसलमान हैं, इस्लाम बहुत बड़ी नेमत है इसकी क़द्र करो और ख़ुदा का शुक्र अदा करो, इसके अन्दर वह फ़िलास्फ़ी है जो केवल ज़ुबान से इक़रार कर लेने से नहीं मिलती।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द-2)

रूहानी ख़ज़ाइन

पुस्तक : "इत्मामुलहुज्जत" (हुज्जत पूरी करना)

(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित)

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

...यद्यपि तर्कों का हाल तो मालूम है कि कथित मौलवी साहिब ने अकारण कुछ पृष्ठ काले करके अपना एक पुराना पर्दा फाश किया और ऐसी निरर्थक बातें लिखी कि हम दो नामों के अतिरिक्त तीसरा नाम रख ही नहीं सकते अर्थात् या तो वे केवल दावे हैं जिनको तर्क कहना अनुचित और मूर्खता है और या यहुदियों की तरह पवित्र क़ुर्आन का अक्षरांतरण है इस से अधिक कुछ नहीं। और मालूम होता है कि उनके दिल में भी यह विश्वास जमा हुआ है कि मेरी पुस्तक में कुछ नहीं। इसलिए उन्होंने इसे छुपाने के लिए पुस्तक के अन्त में कह भी दिया है कि मेरी पुस्तक समझ में नहीं आएगी जब तक कोई एक-एक पाठ मुझ से न पढ़े। यह क्यों कहा? केवल इसलिए कि उनको मालूम था कि उनकी पुस्तक सन्देहों का निवारण करने वाले प्रमाणों से रिक्तमात्र और खाली ढोल है। और जानने वाले अवश्य जान जाएंगे कि इसमें कुछ नहीं। इसलिए किसी बात को दूसरी असंभव बात पर निर्भर करने की तरह उन्होंने यह कह दिया कि वे तर्क जो मैंने लिखे हैं ऐसे छुपे हुए हैं कि वे हर एक को दिखाई नहीं देंगे और केवल मेरी ज़बान उनकी कुंजी रहेगी तथा जब तक कोई मेरे दरवाज़े पर एक समय तक ठहर कर और मेरा शिष्य बन कर इस बकवास के भण्डार का एक-एक पाठ मुझ से न पढ़े तब तक संभव ही नहीं कि उन अस्त-व्यस्त पृष्ठों से कुछ प्राप्त हो सके। हे व्यर्थ की बातें करने वाले मौलवी! यदि तेरे तर्क ऐसे ही गहराई में पड़े हुए और अंधकार में उतरे हुए हैं कि वे तेरी पुस्तक में एक ज़िन्दा सबूत की तरह अपना वजूद बता ही नहीं सकते तो ऐसी निरर्थक और बेकार पुस्तक के लिखने की आवश्यकता ही क्या थी जब तुझे स्वयं मालूम था कि तर्क अत्यन्त बेकार और निरर्थक हैं यहां तक कि तेरी मौखिक बकवास के अतिरिक्त बिना निशान हैं तो ऐसी पुस्तक का लिखना ही बेफायदा था बल्कि उनका तर्क नाम रखना ही अनुचित और शर्म का स्थान तथा डींगें मारने में सम्मिलित है।

यद्यपि इस उपद्रवपूर्ण संसार में हज़ारों प्रकार के छल हो रहे हैं परन्तु ऐसा छल किसी ने कम सुना होगा कि जो इस मौलवी रुसुल बाबा साहिब ने किया कि तर्कों को समझने के लिए शागिर्द होने तथा पुस्तक को एक-एक पाठ करके पढ़ने की शर्त लगा दी और दिल में विश्वास कर लिया कि यह तो किसी बुद्धिमान से हरगिज़ नहीं होगा कि एक मूर्ख एवं मंदबुद्धि व्यक्ति की शागिर्दी ग्रहण करे और उसकी शैतानी पुस्तक उससे एक-एक पाठ पढ़े इस आशा के साथ कि हज़रत मसीह के जीवित रहने के तर्क ऐसे गुप्त तौर पर उसकी पुस्तक में छपे हुए हैं कि समस्त संसार उनको अपनी आंखों से देख नहीं सकता और न उनकी पुस्तक में उनका पता लगा सकता है। यद्यपि हज़ार या करोड़ बार पढ़े और न पुस्तक में उनका कुछ पता

लग सकता है कि कहां हैं। केवल लेखक के मार्ग दर्शन से दिखाई दे सकते हैं अन्यथा क़यामत तक पता लगने से निराशा है।

हे दर्शक गण! क्या आप लोगों ने कभी इससे पहले भी कोई ऐसी पुस्तक सुनी है जिसके तर्क पुस्तक में दर्ज होकर फिर भी लेखक के पेट में ही रहें। अफ़सोस कि आजकल के हमारे मौलवियों में ऐसे ही व्यर्थ छल पाए जाते हैं, जिन से विरोधियों को हंसी ठट्ठा करने का अवसर मिलता है। इसका कारण यही है कि जो उलेमा और विद्वान तथा अहले इल्म हैं वे तो इन अदूरदर्शी और मूर्खों से अलग हो कर हमारी ओर आ जाते हैं। रहे नाम के मौलवी जो उर्दू भी अच्छी तरह नहीं लिख सकते, पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों से अपरिचित हैं। वे केवल बाप-दादों के अनुसरण के कारण हमारे ऐसे विरोधी हो गए हैं कि ख़ुदा जाने कि हम ने उनके किस बाप या दादे को क़त्ल कर दिया है। इन लोगों का रात-दिन का नियमित धार्मिक कर्तव्य गालियां, ठट्ठा और काफ़िर ठहराना है जैसे कभी मरना नहीं, कभी पूछा नहीं जाएगा कि तुम ने मुसलमानों को क्यों काफ़िर कहा। ख़ुदा तआला से लड़ाई कर रहे हैं, हठधर्मी से नहीं रुकते। परन्तु ज़रूरी था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह भविष्यवाणी भी पूरी होती कि महदी मा'हूद अर्थात् वह मसीह मौऊद जब प्रकट होगा तो उस समय के मौलवी उस पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखेंगे और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वह फ़त्वा लिखने वाले लोग सम्पूर्ण संसार के बुरे लोगों से भी अधिक बुरे होंगे और समस्त पृथ्वी पर उनके जैसा कोई भी पापी नहीं होगा। (शेष.....)

(पुस्तक: इत्मामुलहुज्जत पृष्ठ 67-70)

पत्रिका राह-ए-ईमान का पंजीकरण

1- पत्रिका का नाम : राहे ईमान

2- समाचार पत्र की पंजीयन संख्या:

PUNHI NO/ 1999/04052

3- भाषा: हिन्दी

4- प्रकाशन का नियत काल : मासिक

5- प्रकाशक एवं मुद्रक का नाम:

शुएब अहमद

राष्ट्रीयता: भारतीय

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान गुरदासपुर, पंजाब

6- संपादक: फरहत अहमद

राष्ट्रीयता: भारतीय

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान, गुरदासपुर, पंजाब

7- मुद्रण का स्थान:

फज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस

पता: मुहल्ला अहमदिया

क़ादियान, गुरदासपुर पंजाब

प्रकाशन का स्थान:

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया, भारत

क़ादियान 143516, गुरदासपुर, पंजाब

सम्पादकीय

23 मार्च, जमात अहमदिया का स्थापना दिवस

23 मार्च का दिन अहमदिया मुस्लिम जमात के स्थापना दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन जमात अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने पहली बार लोगों से बैअत लेना आरंभ किया था। अर्थात उनको जमात अहमदिया की दीक्षा दी थी। इस दिन 40 लोग हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत करके जमात में सम्मिलित हुए थे। आइए देखते हैं बैअत क्या है और इसकी शर्तें क्या हैं:

बैअत क्या है?

एक हदीस है जिसमें ओबादा बिन सामत रज़ियल्लाहो रिवायत करते हैं कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत इस शर्त पर की, कि हम सुनेंगे और पालन करेंगे, आसानी में भी और परेशानी में भी, खुशी में भी और ग़म में भी और हम शासक से नहीं झगड़ेंगे, और हम जहाँ कहीं भी होंगे सच्चाई पर क़ायम रहेंगे और किसी की निन्दा करने वाले की निन्दा से नहीं डरेंगे।

(सुनने निसाई किताबुल बैअत)

इसकी व्याख्या हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों से पेश है:

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़र्माते हैं- "बैअत से तात्पर्य ख़ुदा तआला को जान सुपुर्द करना है। जिसका मतलब है कि हमने अपनी जान आज ख़ुदा तआला के हाथ बेच दी है।"... (मलफ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 29, 30)

"यह बैअत जिसका वास्तविक अर्थ ये है कि अपने आपको बेच देना। उसकी बरकतें और तासीरें (असर) इसी बैअत की शर्त से संबंधित हैं। जैसे एक बीज ज़मीन में बोया जाता है। तो उसकी प्रारम्भिक अवस्था यही होती है कि जैसे वह किसान के हाथ से बोया गया और इसका कुछ पता नहीं कि अब वह क्या होगा? लेकिन यदि वह बीज अच्छा होता है और उसमें उगने की ताकत मौजूद होती है तो ख़ुदा के फ़ज़्ल (कृपा) से और उस किसान की कोशिश से वह ऊपर आता है और एक दाना से हज़ार दाना बनता है इसी तरह बैअत करने वाले को पहले ख़ाकसारी एवं नम्रता इख़्तियार करनी पड़ती है। और अपने अहंकार और घमण्ड से दूर होना पड़ता है। तब वह तरक़्क़ी के क़ाबिल होता है। लेकिन जो बैअत के साथ अहंकार भी रखता है उसे बरकत कदापि प्राप्त नहीं होती।" (मलफ़ूज़ात, जिल्द 6 पृष्ठ 173)

शराइत-ए-बैअत

अहमदिया मुस्लिम जमाअत् के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत् में सम्मिलित होने के लिए निम्नलिखित शर्तें रखीं:

प्रथम : बैअत करने वाला (दीक्षित होने वाला) सच्चे दिल से इस बात की प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में उस समय तक कि कब्र में चला जाए शिर्क (अर्थात् अल्लाह तआला के साथ देवी–देवताओं और अन्य

सृष्टि की उपासना का सिद्धान्त, अनेकेश्वरवाद) से बचता रहेगा।

द्वितीय : यह कि झूठ और व्यभिचार और बुरी दृष्टि और प्रत्येक दुराचार और अत्याचार और ख़यानत (धरोहर को हानि पहुँचाना) और कलह और विद्रोह की नीतियों से बचता रहेगा और तामसिक आवेगों के समय उनके वशीभूत नहीं होगा चाहे कैसा ही उत्तेजक आवेग हों।

तृतीय : यह कि ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशानुसार पांचों समय की नमाज़ बिला नाग़ा अदा करता रहेगा और यथाशक्ति तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने और प्रत्येक दिन अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने और क्षमायाचना करने में निरन्तर लगा रहेगा और हार्दिक प्रेम से ख़ुदा तआला के उपकारों को याद करके उसकी स्मृति और प्रशंसा करना प्रतिदिन का नियम बनाएगा।

चतुर्थ : यह कि सामान्य रूप से सम्पूर्ण मानव-समाज और विशेषकर मुसलमानों को अपने तामसिक आवेगों के समय किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं पहुँचाएगा, न वाणी से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से।

पंचम : यह कि प्रत्येक अवस्था सुख- दु:ख, सम्पन्नता विपन्नता और सम्पदा-आपदा में ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी करेगा और प्रत्येक हालत में अल्लाह तआला के निर्णय पर राज़ी होगा और उसके मार्ग में प्रत्येक अपमान और दु:ख को स्वीकार करने के लिए तैयार रहेगा और किसी विपत्ति के आने पर मुँह नहीं फेरेगा बल्कि आगे कदम बढ़ाएगा।

षष्टम : यह कि रूढ़ियों और लोभ लालसा के अनुसरण से रुक जाएगा और क़ुर्आन शरीफ के आदेशों को पूर्ण रूप से अपने ऊपर लागू करेगा और अल्लाह तथा उसके रसूल के आदेशों को अपने हर काम में मार्गदर्शक बनाएगा।

सप्तम : यह कि अहंकार और अभिमान को सर्वथा त्याग देगा और शालीनता और सदाचार और दीनता और निरीहता और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करेगा।

अष्टम : यह कि धर्म और धर्म की प्रतिष्ठा और इस्लाम के प्रति सहानुभूति को अपने प्राण और अपने धन और अपनी मान-मर्यादा और अपनी सन्तान और अपने प्रत्येक सगे सम्बन्धी से प्रियतम समझेगा।

नवम : यह कि केवल अल्लाह तआला के लिए समस्त मानवक़ौम से सहानुभूति का व्यवहार करेगा और यथासम्भव अपनी खुदा की दी हुई शक्तियों और संसाधनों से मानव समाज को लाभ पहुँचाएगा।

दशम : यह कि केवल ख़ुदा तआला के लिए इस विनीत से भ्रातृ-सम्बन्ध, पुण्यादेशों का पालन करने का इक़रार करते हुए स्थापित करके उस पर आजीवन क़ायम रहेगा। और इस भ्रातृ-सम्बन्ध में ऐसा उच्च कोटि का होगा कि उसका उदाहरण सांसारिक रिश्तों और सम्बन्धों और समस्त सेवकजन्य अवस्थाओं में पाया न जाता हो। (इश्तिहार तक्मील-ए-तब्लीग़ 12 जनवरी सन् 1889 ई.)

आज भी जो बैअत करता है वह इन उपरोक्त दस शर्तों के पालन करने का वचन करता है।

फरहत अहमद आचार्य

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक- 7.3.2025
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, टिलफोर्ड बर्तानिया

अहादीस-ए-नबवी सअव और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के कथनों की रोशनी में दुआओं के महत्त्व का बयान तथा रमज़ानुल मुबारक के हवाले से जमाअत के दोस्तों को क़ीमती उपदेश।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۖ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ-

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा और सूरः अल-बक़रा की आयत 187 की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने इस आयते करीमा का अनुवाद बयान करते हुए फ़रमाया- अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरे बन्दे तुझसे मेरे सम्बन्ध में सवाल करें तो निःसन्देह मैं निकट ही हूँ, मैं दुआ करने वाले की दुआ का जवाब देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है। अतएव चाहिए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक (आज्ञा मानें) कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदायत पाएं।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि रमज़ान के शुरू होते ही तुरन्त यह विचार दिल में आता है कि नमाज़ों की ओर ध्यान हो क्यूँकि यह बरकतों वाला महीना है इस लिए सामान्यतः लोगों की दिशा मस्जिद की ओर अधिक हो जाती है। यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि कम से कम इन दिनों में लोगों को यह चिन्ता जाग जाती है कि हमें अल्लाह की ओर जाना है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं रमज़ान के दिनों में नर्क के द्वार बंद कर देता हूँ, शैतान को जकड़ देता हूँ और स्वर्ग के द्वार खोल देता हूँ। इस बात से लोग समझते हैं कि केवल रमज़ान में इबादतों की आवश्यकता है, यह ग़लत सोच है। रमज़ान में अल्लाह तआला ने इबादतों की ओर इस कारण से ध्यान दिलाया है ताकि फिर तुम उसे अपने जीवन का अंश बना लो, यदि यह नहीं तो केवल रमज़ान की इबादतें कुछ काम नहीं करेंगी।

आँहुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति ईमान की शर्तों को पूरा करते हुए और पुण्य की धारणा से रमज़ान की रातों में उठकर नमाज़ पढ़ता है तो उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिए जाते हैं।

अल्लाह तआला अति क्षमाशील है, वह हमें अवसर देता है कि यदि पूरे वर्ष में तुम से ग़लतियां हो गई हैं तो तुम नए सिरे से यह प्रतिज्ञा करो कि तुम भविष्य में अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने वाले बनोगे और उन समस्त नेकियों को करने वाले बनोगे जिनका अल्लाह ने आदेश दिया है, तो नि:सन्देह वह अति दया के साथ तुम्हारी ओर ध्यान देगा। इस आयत में जो अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया कि जब मेरे बन्दे तुझसे सवाल करें ..... यहाँ बन्दे कहने का अभिप्राय: यह है कि जो अल्लाह के सच्चे प्रेमी हैं। अब प्रेमी ऐसा तो नहीं होता कि ग्यारह महीने उसे प्रेम याद न आए तथा वह केवल एक महीना प्रेम एवं स्नेह अभिव्यक्त करे। इस लिए हमें यह दुआ करते रहना चाहिए कि ऐ अल्लाह! हमें अपनी निकटता प्रदान कर, हमें स्वीकार होने वाली दुआओं की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

अल्लाह तआला ने क़ुरान करीम में बार बार ध्यान दिलाया है कि अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों की ओर ध्यान दो। एक जगह हज़रत मसीह मौऊद ने फ़रमाया कि कुराने करीम में सात सौ आदेश हैं, बल्कि एक स्थान पर फ़रमाया कि सात सौ से अधिक आदेश हैं। जब हम रमज़ान में क़ुरान पढ़ेंगे तो स्वभवत: हम आदेश भी खोजेंगे और जब आदेशों की खोज होगी तो उनके अनुसार कर्म करने वाले भी होंगे, यही एक सच्चे आशिक़ का काम है।

अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ईमान और नेक कर्म ऐसी चीज़ें हैं जो साथ साथ चलती हैं। जब अल्लाह तआला पर ईमान और उसके आदेशानुसार अमल होगा तो ऐसा व्यक्ति फिर ख़ुदा का दोस्त बन जाता है और जब ख़ुदा तआला की दोस्ती मिलेगी तो उससे अल्लाह तआला की निकटता की प्राप्ति होगी और फिर इस निकटता में बढ़ते चले जाएँगे। यह निकटता ऐसी नहीं कि फिर एक जगह रुकने वाली हो, अल्लाह तआला इस निकटता के बदले दुआओं को भी सुनेगा। अतएव रमज़ान में हमें इस स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला ने दुआओं की क़बूलियत के लिए भी खुछ शर्तें रखी हैं जिनमें पहली तो यही है कि उसका बंदा बनकर रहना होगा, विशुद्ध होकर उसकी इबादत करनी होगी, उसको समस्त शक्तियों का स्रोत समझना होगा, कोई झूठे ख़ुदा नहीं बनाने, अन्यथा यह शिर्क की ओर ले जाने वाली बात होगी। सबसे बड़ी चीज़ यह है कि अल्लाह तआला से उसका रहम और प्यार मांगो और उसके आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करने का प्रयास करो।

आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने असंख्य अवसरों पर हमें नेकियों पर क्रियाशील रहने की ओर ध्यान दिलाया है। हज़रत मसीह मौऊद अले. ने हमें बार बार इसकी ओर ध्यान दिलाया है। बैअत की दस शर्तों में से अक्सर शर्तें यही हैं कि अल्लाह और उसके प्राणियों के अधिकारों की ओर ध्यान दो। अत: हमें इनके अधिकारों ओर ध्यान देना चाहिए, जब हम यह करेंगे तो अल्लाह तआला नि:सन्देह हमारा मित्र एवं संरक्षक बन जाएगा, वह हमारी दुआओं को सुनेगा। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला उन लोगों की दुआ सुनता है जो असंतोष नहीं दिखाते, और यह नहीं कहते कि मैंने बहुत दुआएं कर लीं, अल्लाह तआला सुनता ही नहीं। फ़रमाया- यह कुफ्र है और अल्लाह से दूर ले जाने वाली बात है।

हज़रत मसीह मौऊद अले. फ़रमाते हैं कि यह तो दो मित्रों का सम्बन्ध होता है, कभी दोस्त अपने

दोस्त की मान लेता है, कभी दोस्त अपनी मनवा लेता है। इसी प्रकार ख़ुदा मामला करता है, परन्तु प्रत्यक्षत: जो एक मोमिन की दुआ ख़ुदा निरस्त करता है यह भी वास्तव में उसकी भलाई के लिए है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मेरे बन्दे मेरे विषय में प्रश्न करें कि ख़ुदा के अस्तित्व का प्रमाण क्या है तो जवाब यह है कि मैं अत्यन्त निकट हूँ, किसी बड़े प्रमाण की आवश्यकता नहीं, अत्यन्त सरलता पूर्वक मेरे अस्तित्व का प्रमाण देखा जा सकता है और प्रमाण यह है कि जब कोई दुआ करने वाला मुझे पुकारे तो मैं उसकी सुनता हूँ और अपने इलहाम से उसकी सफलता की सूचना देता हूँ। क़ुरआन में जो यह कहा गया है कि يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अले. ने इसकी अत्यन्त सूक्षम व्याख्या फ़रमाई है। फ़रमाया- ग़ैब भी ख़ुदा का नाम है, फ़रमाया- हर दुआ से पहले यह विश्वास हो कि ख़ुदा है तथा वह अत्यधिक गुणों को अपने अन्दर रखता है, जब इस विश्वास के साथ आगे बढ़ोगे तो फिर तुम्हें ख़ुदा का वास्तविक बोध प्राप्त होगा, यह नहीं कि केवल रमज़ान में नमाज़ों की ओर ध्यान पैदा हो। अल्लाह तआला का फज़ल है कि अहमदी लोग नमाज़ों की ओर अत्यधिक ध्यान देते हैं किन्तु फिर भी इसमें कमी है।

चाहिए कि हम इस रमज़ान को ऐसा रमज़ान बनाएं जो हमारी इबादतों के स्तर बुलन्द करने वाला हो, हमें ख़ुदा तआला की निकटता दिलाने वाला हो, ताकि हम अल्लाह तआला के शुद्ध बन्दे बनने वाले हों। अत: इस रमज़ान में हमें यह संकल्प करना चाहिए कि हम अपनी इबादतों को जीवंत करेंगे, फिर इसके लिए अल्लाह तआला से दुआ भी मांगें। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुआ उस परीक्षा के मुक़ाबले पर जो आ चुकी है, और उसके मुक़ाबले पर जो अभी आने वाली है, लाभ देती है, ऐ अल्लाह के बंदो! तुम्हारे लिए अनिवार्य है कि तुम दुआएं करना जारी रखो।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि केवल रमज़ान के महीने ही में तो कष्ट एवं समस्स्याएं नहीं आतीं, विभिन्न समय पर आती रहती हैं इस लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम केवल उस समय ही दुआ न करो जब कठिनाई आए बल्कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुआ उन कठिनाइयों से बचाने में भी सहायता देती है जो अभी नहीं आईं, इस लिए निरन्तर दुआ से काम लेते रहना चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि तुम्हारा रब निकट के आकाश पर अवतरित होता है, और जब रात का तीसरा भाग शेष रह जाता है तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि कौन है जो मुझे पुकारे तो मैं उसे जवाब दूं, कौन है जो मुझसे मांगे तो मैं उसको दूं, कौन है जो मुझसे क्षमा चाहे तो मैं उसे क्षमा प्रदान करूं। यह केवल रमज़ान के महीने के लिए नहीं बल्कि निरन्तर है। आँहज़रत सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति यह चाहता है कि अल्लाह तआला कष्टों के समय उसकी दुआओं को क़बूल करे तो उसे चाहिए कि सुविधा एवं समृद्धि में अत्यधिक दुआ करे। अतएव ये बातें अत्यन्त आवश्यक हैं, हमारा अल्लाह तआला से सुदृढ़ सम्बन्ध होना चाहिए।

एक रिवायत में यह भी आता है कि रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं बन्दे की सोच के अनुसार उसके साथ व्यवहार करता हूँ, जिस समय बन्दा मुझे याद करता है, मैं उसके साथ होता हूँ, यदि वह मुझे दिल में याद करता है तो मैं उसे दिल में याद करूंगा, यदि वह मेरी चर्चा किसी सभा में करेगा तो मैं उसकी

चर्चा उससे बड़ी सभा में करूंगा, यदि वह मेरी ओर एक बालिश्त आएगा तो मैं उसकी ओर एक हाथ जाऊँगा, यदि वह मेरी ओर एक हाथ आएगा तो मैं उसकी ओर दो हाथ जाऊँगा, यदि वह मेरी ओर चल कर आएगा तो मैं उसकी ओर दौड़ कर जाऊँगा। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हर अहमदी को यह प्रयास करना चाहिए कि अल्लाह तआला की याद से अपनी ज़बानों को सुसज्जित रखे, हमारा प्रत्येक कर्म ऐसा होना चाहिए कि हम ख़ुदा की ओर क़दम बढ़ाने वाले हों। एक रिवायत में लिखा है कि नबी करीम स. ने फ़रमाया कि ज़ुन्नून अर्थात युनुस अलैहिस्सलाम ने मछली के पेट में यह दुआ की- لَا اله الا انت سبحانك انى كنت من الظٰلمين फ़रमाया- इस दुआ को जो भी मुसलमान किसी दुविधा के समय करेगा, अल्लाह तआला उसकी दुआ को अवश्य ही क़बूल फ़रमाएगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला अपने बन्दों पर अत्यन्त दयालु है, उसने स्वंय ही बन्दों को दुआएं सिखाई हुई हैं। क़ुरआने करीम में जो विभिन्न दुआएं सिखाई गई हैं वे इसी लिए हैं ताकि हम ये दुआएं मांगें और अल्लाह तआला अवश्य ही इनको क़बूल फ़रमाएगा, परन्तु शर्त वही है कि हम पहले उसका हक़ अदा करने वाले हों।

हज़रत मसीह मौऊद अले. इस दुआ के बारे में फ़रमाते हैं कि इससे एक यह पता चलता है कि अल्लाह तआला भाग्य को भी बदल देता देता है, रोना धोना और दान दक्षिणा जो हज़रत युनुस अले. की क़ौम में घटना हुई थी, दण्डित करने वाले आरोप पत्र को भी खंडित कर देता है। फ़रमाया- जो लोग कष्टों के आने से पहले दुआ और इस्तगफ़ार करते हैं और दान इत्यादि देते हैं, अल्लाह तआला उन पर दया करता है और उन्हें अपने प्रकोप से बचा लेता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- पिछले दिनों मैंने दुआओं की तहरीक की थी, उसमें इस्तगफ़ार की ओर भी ध्यान दिलाया था। हज़रत मसीह मौऊद अले. ने फ़रमाया कि इस्तगफ़ार एक ढाल है, अत: इसकी ओर भी ध्यान दें, ख़ूब इस्तगफ़ार करें, सच्चे दिल से दुआओं की ओर ध्यान दें, रमज़ान के बाद भी दुआओं पर क़ायम रहने का प्रयास करें और फिर देखें कि ख़ुदा तआला किस प्रकार दौड़ कर हमारे पास आता है और हमें अपनी छत्रछाया में ले लेता है।

हुज़ूरे अनवर ने दुआओं की तहरीक करते हुए फ़रमाया कि आजकल जो दुनिया में कुछ स्थानों पर समस्सयाएं हैं, पाकिस्तान, बंगला देश, अल्जीरिया इत्यादि तथा कुछ अफ़्रीकन देश जहाँ कुछ विशेष दलों ने क़ब्ज़े किए हुए हैं अथवा इन दलों की ओर से आक्रमण होते हैं, वहां की सरकारें भी इनसे डर कर इनकी बात मान लेती हैं, हमें यह दुआ करनी चाहिए कि ऐ अल्लाह! हमें इन दुष्टों से मुक्ति दे, स्वंय इनसे बदला ले। जब हम इस तरह दुआएं करेंगे तो अल्लाह तआला अवश्य एक महान क्रान्ति पैदा फ़रमाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अले. फ़रमाते हैं कि उसकी कृपा की प्राप्ति का निकटतम मार्ग दुआ है और दुआ के सम्पूर्ण नियम ये हैं कि उसमें पीड़ा हो, व्याकुलता हो, दु:ख हो। दुआओं की ओर हमें बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है, इस रमज़ान को ऐसा रमज़ान बनाएं कि जो दुआओं की क़बूलियत वाला रमज़ान हो। अल्लाह तआला हमें समस्त शत्रुओं एवं अत्याचारियों से मुक्ति दे।

क़ुर्आन और हदीस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलीलें और ईमानवर्धक घटनाओं का वर्णन

क़िस्त - 1 अनुवादक : अली हसन एम् ए

128वें जलसा सालाना क़ादियान 2023 ई. के समापन समारोह के सुअवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का प्रभावी एवं ज्ञानवर्धक हृदयंगम भाषण। दिनांक 31 दिसम्बर सन् 2023 ई.)

कलिमा तौहीद और सूर: फ़ातिहा की तिलावत के बाद क़ुर्आन करीम की सूर: मुज़्ज़म्मिल की निम्नलिखित आयत पढ़ी -

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا

(अल् मुज़्ज़म्मिल्-16)

इस आयत का तर्जुमा यह है कि हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है जो तुम पर उसी तरह संरक्षक है जिस तरह हमने फ़िरऔन की ओर एक रसूल भेजा था।

फिर आप ने फरमाया: **आज क़ादियान में जमाअत अहमदिया भारत का जलसा सालाना अपने समापन को पहुँच रहा है** और साथ ही कई अन्य देश भी हैं जहाँ इन दिनों जलसा सालाना का आयोजन हुआ है। कहीं पिछले सप्ताह हुआ है, कहीं हो रहा है और कहीं अगले सप्ताह होगा। आज भी इस समय यह समापन समारोह सैनीगाल, टोगो, गिनी कनाकरी, गिनीबसाओ इत्यादि विभिन्न देशों में हो रहा है, और इन सबका सीधा प्रसारण हो रहा है, हम उन्हें देख रहे हैं वे हमें देख रहे हैं।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से जो अल्लाह तआला ने वादा किया था कि:-

''मैं तुझे ज़मीन के किनारों तक प्रतिष्ठा के साथ प्रसिद्धि दूँगा और तेरे मान-सम्मान को बढ़ाऊँगा और तेरा प्रेम दिलों में डाल दूँगा। جَعَلۡنَاكَ الۡمَسِيۡحَ ابۡنَ مَرۡيَمَ (अर्थात हमने तुझे मसीह इब्नि मरियम बना दिया है) उनको कह दे कि मैं ईसा अलैहिस्सलाम के रूप में आया हूँ।'' (इज़ाल: औहाम भाग-2, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-3 पृ. 442)

ख़ुदाई वादे के पात्र

अत: अब सारी दुनिया के देशों में जलसों का आयोजन, आपका नाम आदर और सम्मान से पुकारा जाना, आपके नाम का नारा, यह सब उस ख़ुदाई वादा के अनुसार हैं कि आप ही इस युग के वह मसीह व महदी हैं जो अल्लाह तआला के वादे के अनुसार और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में अवतरित हुए।

आज यह क़ादियान की बस्ती जो सौ सवा सौ वर्ष पहले एक साधारण सा गाँव या बस्ती थी एक सुन्दर शहर के रूप में विकसित हो गई है, बल्कि दुनिया के कोने-कोने में यह प्रसिद्ध है और यह प्रसिद्धि हज़रत मसीह

व महदी के यहाँ अवतरित होने के कारण है, अल्लाह तआला के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए वादों के कारण है। आज इस बस्ती में संसार के दर्जनों देशों के वासी जलसा सालाना में सम्मिलित होने के लिए इकट्ठे हुए हैं। इस समय लगभग 42 देशों के प्रतिनिधि वहाँ मौजूद हैं। रूसी देशों के लोग भी हैं, अरब देशों के लोग भी हैं, अफ्रीकी देशों के लोग भी हैं, इण्डोनेशिया और द्वीप समूहों के लोग भी हैं, यूरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलिया इत्यादि महाद्वीपों के लोग भी हैं। अत: यह एक सुन्दर निशान है अल्लाह तआला के वादों के पूरा होने का। एक आदमी जो एक छोटी सी जगह में रहता है, जहाँ पहुँचने के रास्ते भी कठिन हैं और किसी प्रकार के साधन भी नहीं, वह दावा करता है कि अल्लाह तआला ने मुझसे वादा किया है कि मैं तुझे प्रतिष्ठा के साथ प्रसिद्धि दूँगा और फिर वह वादा बड़ी शान से पूरा भी हो रहा है कि अल्लाह तआला ने चौदहवीं सदी में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के एक सच्चे सेवक के आने की ख़ुशख़बरी दी थी ताकि धर्म (इस्लाम) की तरोताज़गी का एक नया दौर शुरू हो। अब उसको ख़ुदा तआला पूरा कर रहा है। इसलिए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम वह मसीह मौऊद व महदी मअहूद है जो अल्लाह तआला के वादों के अनुसार दीन-ए-इस्लाम के पुनरुत्थान और सारी दुनिया में उसके पूर्णरूपेण प्रचार व प्रसार के लिए अवतरित हुए हैं।

अत: मुसलमानों को तो इस बात पर ख़ुश होना चाहिए कि इस्लाम के पुनरुत्थान का ज़माना आया है और कमज़ोरियाँ दूर करने का समय आया है और इस्लाम को सारी दुनिया में फैलने-फैलाने का ज़माना आया है। लेकिन झूठे उलमाओं के स्वार्थ भोलेभाले और वास्तविक इस्लाम से अनजान मुसलमानों को सही रास्ते से भटकाने की कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन एक समय आएगा जब उन्हें मानना पड़ेगा (कि अहमदियत सच्ची है)। यह भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला का वादा है कि अन्तत: यह लोग स्वीकार करेंगे।

अल्लाह तआला के समर्थन (तायीदात)

इस समय मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव और अल्लाह तआला के समर्थनों से सम्बन्धित कुछ बातें करूँगा।

यह आयत जो अभी मैंने पढ़कर सुनाई है इसकी गूढ़ और रहस्यपूर्ण व्याख्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी विभिन्न रचनाओं में वर्णन की है। यहाँ उनके कुछ उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

''स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न पैदा होता है कि मसीह मौऊद को इस उम्मत में से पैदा करने की ज़रूरत ही क्या थी? इसका उत्तर यह है कि अल्लाह तआला ने क़ुर्आन शरीफ़ में यह वादा किया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी नबूव्वत काल के आरम्भिक और अन्तिम युग की दुष्टि से हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के तुल्य होंगे। अत: वह एक तुल्यता तो अव्वल (आरम्भिक) ज़माने में थी जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ज़माना था और एक आख़िरी (अन्तिम) ज़माना में होगी।.....अत: अव्वल (आरम्भिक) तुल्यता यह साबित हुई कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को ख़ुदा ने फ़िरऔन और उसके

लश्कर (गिरोह) पर सफलता दी थी उसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अबूजहल और उसके लश्कर (गिरोह) पर, जो उस ज़माने का फ़िरऔन था। फिर उन सब को समाप्त करके इस्लाम को अरब देश में स्थायित्व प्रदान किया और उस ख़ुदाई सहायता से यह पेशगोई पूरी हुई कि:-

اِنَّآ اَرۡسَلۡنَآ اِلَيۡكُمۡ رَسُوۡلًا ۢ شَاهِدًا عَلَيۡكُمۡ كَمَآ اَرۡسَلۡنَآ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا ؕ

(अल् मुज़्ज़म्मिल्-16)

और आख़िरी (अन्तिम) ज़माने में यह तुल्यता है कि ख़ुदा तआला ने मूसवी उम्मत के आख़िरी ज़माने में एक ऐसा नबी अवतरित किया जो जिहाद (अर्थात् धार्मिक लड़ाइयों) का मुख़ालिफ़ था और धार्मिक लड़ाइयों से उसे कुछ सरोकार न था, बल्कि क्षमा और दरगुज़र करना उसकी शिक्षा थी, और वह ऐसे समय में अवतरित हुआ था कि जब बनी इस्राईल (अर्थात् यहूदियों) के आचरण बहुत बिगड़ चुके थे और उनके चाल-चलन में बहुत ख़राबियाँ पैदा हो गई थीं और उनका शासन समाप्त हो चुका था और वे रोमी शासन के अधीन हो चुके थे, और वह हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के बाद ठीक चौदहवीं सदी पर अवतरित हुआ था और उस पर इस्राईली नबूवत् का सिलसिला समाप्त हो गया था और वह इस्राईली नबूवत् की आख़िरी ईंट था।

इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आख़िरी ज़माना में मसीह इब्नि मरियम के स्वभाव पर इस विनीत लेखक को अवतरित किया और मेरे ज़माने में जिहाद की परम्परा को उठा दिया, जैसा कि पहले से भविष्यवाणी की गई थी कि मसीह मौऊद के ज़माने में जिहाद को स्थगित कर दिया जाएगा। इसी तरह मुझे क्षमा और माफ करने की शिक्षा दी गई है और मैं ऐसे समय में आया हूँ जब कि अधिकतर मुसलमानों की अन्दरूनी हालत यहूदियों की तरह ख़राब हो चुकी थी और उनमें रूहानियत ख़त्म होकर सिर्फ़ रस्मोरिवाज शेष रह गया था और क़ुर्आन शरीफ़ में इन विषयों की ओर पहले से संकेत किया गया था।

(लैक्चर सियालकोट, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-20 पृ. 212-213)

फिर एक जगह आप फ़रमाते हैं:-

''मसीह मौऊद के बारे में भविष्यवाणी केवल हदीसों में नहीं है, बल्कि क़ुर्आन शरीफ़ ने अत्यन्त रहस्यपूर्ण संकेतों में आने वाले मसीह की ख़ुशख़बरी दी है। जैसा कि उसने वादा किया है कि जिस तरह और तरीके से इस्राईली नबूवतों में सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त क़ायम किया गया है उसी तरह इस्लाम में होगा। यह वादा अपने अन्दर मसीह मौऊद के आने की ख़ुशख़बरी रखता है। क्योंकि जब बनी इस्राईल के नबियों में क़ायम होने वाले सिलसिला-ए-ख़िलाफ़त पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि वह सिलसिला हज़रत मूसा से शुरू हुआ और फिर चौदह सौ वर्ष बाद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पर ख़त्म हो गया और इस निज़ाम-ए-ख़िलाफ़त पर ग़ौर करने से ज्ञात होता है कि यहूदियों का मसीह मौऊद जिसके आने की यहूदी क़ौम को ख़ुशख़बरी दी गई थी, वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चौदह सौ वर्ष बाद आया था और ग़रीबों और असहायों के रूप में अवतरित हुआ और इस समानता को पूर्ण करने के लिए जो क़ुर्आन शरीफ़ में दोनों सिलसिलों अर्थात् ख़िलाफ़त-ए-इस्राईली और ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदी में रखी गई है, आवश्यक है कि हर एक न्यायप्रिय इस बात को स्वीकार करे कि सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया के आख़िर में भी एक मसीह मौऊद के आने का वादा हो, जैसा

कि सिलसिला ख़िलाफ़त-ए-मूसविया के आख़िर में एक मसीह मौऊद का वादा था, और दोनों सिलसिलों की व्यापक समानता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस तरह ख़िलाफ़त-ए-मूसविया में मूसा अलैहिस्सलाम के बाद चौदहवीं सदी में बनी इस्राईल के लिए मसीह मौऊद अवतरित हुआ था उसी तरह ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उसी अवधि के अन्दर ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया का मसीह मौऊद अवतरित हो। इसके अतिरिक्त व्यापक समानता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस तरह यहूदियों के उलमा ने ख़िलाफ़त-ए-मूसविया में आने वाले मसीह मौऊद को नऊज़बिल्लाह काफ़िर और मुल्हिद (अधर्मी और नास्तिक) और दज्जाल ठहरा दिया था, उसी तरह ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया के मसीह मौऊद को मुसलमानों के रूढ़िवादी उलमा (अर्थात् मौलवी-मुफ़्ती) काफ़िर और मुल्हिद और दज्जाल ठहरावें। और व्यापक समानता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस तरह ख़िलाफ़त-ए-मूसविया का मसीह मौऊद ऐसे समय में आया था कि जब यहूदियों के आचरण बहुत ख़राब हो गए थे और दियानत और अमानत और तक़्वा (संयम) और पाकीज़गी और पारस्परिक प्रेम और मैत्रीयता में बहुत बिगाड़ आ चुका था और उनका उस देश का शासन भी समाप्त हो गया था जिस देश में मसीह मौऊद उनके सन्मार्गदर्शन के लिए अवतरित हुआ था। उसी तरह ख़िलाफ़त-ए-मुहम्मदिया का मसीह मौऊद क़ौम की ऐसी हालत और ऐसी दुर्दशा के समय अवतरित हो। (जो यहूदियों की हो चुकी थी अनुवादक)।

(अय्यामुस्सुलह, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-14 पृ. 283-284)

अत: यही हालात थे जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने दावा किया और फ़रमाया कि मैं ही वह मसीह मौऊद हूँ जिसने आना था।

क्या मसीह मौऊद के ज़माने के बारे में क़ुर्आनी पेशगोइयाँ हैं?

इस बारे में हम देखते हैं यह पेशगोइयाँ किस शान से पूरी हुईं और अब भी पूरी हो रही हैं। इसकी व्याख्या करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

फिर इसी ज़माने की निशानियों में से यह भी है कि उस समय भौतिक ज्ञान एवं कलाओं की खोज होगी। कुछ आविष्कारों और कलाओं को उदाहरणत: बयान फ़रमाया है जो निम्नलिखित हैं:-

وَ اِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ وَ اَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَ تَخَلَّتْ (الانشقاق:4تا5)

जब ज़मीन खींची जाएगी अर्थात् ज़मीन साफ़ की जाएगी और आबादी बढ़ जाएगी और जो कुछ ज़मीन में है उसको ज़मीन बाहर डाल देगी और ख़ाली हो जाएगी अर्थात् समस्त भौतिक योग्यताएँ प्रकट हो जाएँगी और यह पेशगोई भी हम पूरी होती देख रहे हैं इसके अलावा आबादियाँ बढ़ रही हैं खनिज पदार्थों को भी निकाला जा रहा है और कई देशों में तो कई खानें कुछ इलाक़ों में समाप्त हो गई हैं।

फिर फ़रमाया कि:- وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (अल् तकवीर : 5) अर्थात् उस ज़माने में ऊँटनी बेकार हो जाएगी और उसकी कोई क़द्र न होगी।

फिर फ़रमाया:- وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ (अल् तकवीर : 11) और जब किताबें छापी जाएँगी और फैलाई जाएँगी अर्थात् किताबों के प्रचार-प्रसार के साधन पैदा हो जाएँगे। यह प्रिंटिंग प्रैसों और डाकख़ानों की ओर संकेत है कि आख़िरी ज़माने में उनकी अधिकता हो जाएगी, और अब तो प्रचार-प्रसार के और भी नए-नए साधन निकल आए हैं। आज यह हमारा जलसा जो पूरे विश्व में प्रसारित हो रहा है यह भी उसी का परिणाम है।

फिर फ़रमाया:- وَ اِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ (अल् तकवीर : 8)

और जिस समय वजूद (अस्तित्व) परस्पर मिलाए जाएँगे। यह सुदूर देशों की क़ौमों के परस्पर मेल-मिलाप की ओर संकेत है। तात्पर्य यह कि आख़िरी ज़माने में रास्तों के खुलने और डाक-टेलीग्राम इत्यादि की व्यवस्था हो जाने के कारण लोगों के सम्बन्ध बढ़ जाएँगे और एक देश दूसरे देश से मिलेगा और दूर-दूर के रिश्ते और व्यापारिक सहमतियाँ होंगी और दूर-दूर के देशों से मित्रता बढ़ जाएगी। टेलीविजन, इन्टरनेट, वायुमार्ग इत्यादि इसका प्रमाण हैं। आज लोग अनेक देशों से आकर यहाँ क़ादियान में एकत्र हुए हैं, यह इसी का प्रमाण है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तब्लीग़ (प्रचार-प्रसार) के द्वारा संसार के हर देश में जो इस्लाम का पैग़ाम पहुँचा है यह उसी बात का मुँह बोलता प्रमाण है।

फिर फ़रमाया:- وَ اِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ (अल् तकवीर : 6)

और जिस समय वहशी आदमियों के साथ इकट्ठे किए जाएँगे। तात्पर्य यह कि वहशी क़ौमों में सभ्यता और शिष्टता पैदा होगी, अत्यन्त नीच और कमीने सांसारिक पद-प्रतिष्ठा पाएँगे, भौतिक ज्ञान एवं कलाओं के फैलने के कारण कुलीनों और कमीनों में कुछ अन्तर नहीं रहेगा, बल्कि कमीने प्रभुत्व पा जाएँगे, यहाँ तक कि सरकारी ख़ज़ाना और सत्ता की बागडोर उनके हाथ में होगी और इस आयत का विषय एक हदीस के सार से भी मिलता है।

फिर फ़रमाया:- وَ اِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ (अल् इन्फ़तार : 4)

और जिस समय दरिया फाड़े जाएँगे अर्थात् ज़मीन पर नहरें फैल जाएँगी और खेतीबाड़ी अधिकता से होगी।

फिर फ़रमाया:- وَ اِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ (अल् मुरसलात : 11)

और जिस समय पहाड़ उड़ाए जाएँगे और उनमें पैदल और सवारों के चलने की सड़कें या रेल के रास्ते बनाए जाएँगे।

फिर इसके अतिरिक्त घोर अन्धकार फैलने की निशानियाँ बयान फ़रमायीं।

और फ़रमाया:- اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ (अल् तकवीर : 2)

जिस समय सूरज लपेटा जाएगा अर्थात् घोर अन्धकार, मूर्खता और पाप दुनिया पर छा जाएगा मानो व्यापक अँधेरा छा जाएगा। आजकल यही है गुनाहों (पापों) में सारे लिप्त हैं। फिर फ़रमाया:-

وَ اِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ (अल् तकवीर : 3)

और जिस समय तारे धुंधले हो जाएँगे अर्थात् उलमा का नूर-ए-इख़्लास जाता रहेगा (अर्थात् छल और कपट से भर जाएँगे)।

फिर फ़रमाया:- وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ (अल् इन्फ़तार : 3)

और जिस समय तारे झड़ जाएँगे अर्थात् रब्बानी उलमा (अध्यात्मज्ञ) गुज़र जाएँगे, क्योंकि यह तो सम्भव ही नहीं कि ज़मीन पर तारे गिरें और फिर ज़मीन पर लोग ज़िन्दा रह सकें। इससे तात्पर्य यह नहीं कि असली सितारे ज़मीन पर गिरेंगे बल्कि यह तात्पर्य है कि जो रब्बानी उलमा हैं वे नहीं रहेंगे।

फिर फ़रमाया कि:-

याद रहे कि मसीह मौऊद के आने के लिए इसी तरह की पेशगोई इन्जील में भी है कि वह उस समय आएगा कि जब ज़मीन पर तारे गिर जाएँगे और सूरज और चाँद का नूर जाता रहेगा। और इन पेशगोइयों को ज़ाहिर पर चस्पाँ (चरितार्थ) करना कल्पना से इतना दूर है कि कोई बुद्धिमान कदापि यह नहीं सोच सकता कि सचमुच सूरज की रौशनी समाप्त हो जाए और सारे सितारे ज़मीन पर गिर पड़ें और फिर हमेशा की तरह लोग ज़मीन में ज़िन्दा रहें और इस हालत में मसीह मौऊद आए।

अगर ज़ाहिरी अर्थों में लें तो यह सम्भव ही नहीं है। यदि तारे गिरें और सूरज की रौशनी ख़त्म हो जाए तो यह तो तबाही, बर्बादी और क़यामत का नज़ारा होगा, उस समय मसीह मौऊद आकर क्या करेगा? और किस लिए आएगा जब आबादी ही नहीं होगी?

और फिर फ़रमाया:- اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ (अल् इन्शक़ाक़ : 2)

जिस समय आसमान फट जाएगा। इसी तरह फ़रमाया:-

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ (अल् इन्फ़तार : 2)

और इन्जील में भी इसी तरह मसीह मौऊद के आने की भविष्यवाणी है।

अत: इन आयतों से यह तात्पर्य नहीं है कि सचमुच उस समय आसमान फट जाएगा या उसकी शक्तियाँ समाप्त हो जाएँगी, बल्कि अभिप्राय यह है कि जैसे फटी हुई चीज़ बेकार हो जाती है उसी तरह आसमान भी बेकार सा हो जाएगा अर्थात् आसमान से भलाइयाँ नाज़िल नहीं होंगी और दुनिया अन्याय और अत्याचार से भर जाएगी अर्थात् रूहानियत (आध्यात्मिकता) ख़त्म हो जाएगी, और इसको आज सब मानते हैं कि रूहानियत ख़त्म हो चुकी है।

और फिर एक जगह फ़रमाया:- وَ اِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ (अल् मुरसलात् : 12)

जब रसूल निर्धारित समय पर लाए जाएँगे। यह संकेत वस्तुत: मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव की ओर है और इस बात का वर्णन करना उद्देश्य है कि वह ठीक समय पर आएगा।

(शहादतुल् क़ुर्आन, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-6 पृ. 317-319)

आजकल के उलमा मसीह मौऊद को न मानने के बहाने ढूँढ़ते हुए कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि क़यामत (महाप्रलय) के निकट का ज़माना होगा। अब कोई बताए कि जब धरती उथल-पुथल हो रही होगी तो रसूलों को जमा करके लाने का क्या मतलब है? असल बात यही है कि ख़ात्मुन्नबीयीन (समस्त अवतारों के गौरव हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अनुसरण करने वालों में से एक रसूल (अवतार) आएगा जो तमाम् रसूलों के मानने वालों को इकट्ठा करेगा और ख़ात्मुन्नबीयीन (समस्त अवतारों के गौरव हज़रत मुहम्मद) सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्शों और आदेशों के पालन की ओर लाएगा। काश पाखण्डी

और रूढ़िवादी उलमा इस रहस्य को समझें। बहरहाल यह सारी क़ुर्आनी आयतें सिद्ध करती हैं कि यह ज़माना मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव का ज़माना है।

मसीह मौऊद के ज़माने के बारे में हदीसों में वर्णित पेशगोइयाँ

फिर आप ने मसीह मौऊद के ज़माने के बारे में हदीसों में वर्णित पेशगोइयाँ भी वर्णन कीं। उदाहरणत: मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव के साथ नई सवारियों के आविष्कार की पेशगोई का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं:-

क़यामत के निकट होने और मसीह मौऊद के आने का वह ज़माना है कि जब ऊँटनियाँ बेकार हो जाएँगी यह आयत हदीस सहीह मुस्लिम की उस हदीस को सत्यापित करती है जहाँ लिखा है कि:-

وَيُتْرَكَ الْقِلَاصُ فَلَا يُسْعَى عَلَيْهَا

अर्थात् मसीह मौऊद के ज़माने में ऊँटनियाँ बेकार छोड़ दी जाएँगी और उन पर कोई यात्रा न करेगा। यह रेलगाड़ी के आविष्कार की ओर संकेत है। क्योंकि जब कोई उच्चकोटि की सवारी मिलती है तब निम्नकोटि की सवारी को छोड़ते हैं। और दूसरी आयत मानो इसका परिणाम है और उसका तर्जुमा यह है कि उस ज़माने में दूर-दूर के लोग परस्पर मेल-मुलाक़ात करेंगे और लोगों की ज़ाहिरी दूरियाँ सिमट जाएँगी और हदीस सहीह मुस्लिम में खोलकर बयान कर दिया गया है कि ऊँटनियों के बेकार होने का ज़माना मसीह मौऊद का ज़माना है। इसलिए क़ुर्आन शरीफ़ की यह आयत : وَ اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ (तक़वीर-5) जो हदीस يُتْرَكَ الْقِلَاصُ के समानार्थक है, खोलकर बयान कर रही है कि रेल के आविष्कार की यह घटना मसीह मौऊद के ज़माने में होगी। और यह ज़माना हमने देखा, मक्का और मदीना के बीच पहले अधिकतर सड़कमार्गों द्वारा यात्रा की जाती थी, पाँच-छ: साल से अब तो वहाँ भी रेल की व्यवस्था हो गई है।

फ़रमाया:-

इसीलिए मैंने आयत اِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ के यही अर्थ किए हैं कि वह ज़माना मसीह मौऊद का ज़माना है। क्योंकि हदीस ने इस आयत की व्याख्या कर दी है। चूँकि रेल के आविष्कार पर एक लम्बा ज़माना गुज़र चुका है जो मसीह मौऊद के प्रादुर्भाव की एक निशानी है। इसलिए एक न्यायप्रिय को मानना पड़ता है कि मसीह मौऊद प्रकट हो चुका है।....सोचकर देखो कि जब मक्का और मदीना के बीच ऊँट को छोड़कर रेल की सवारी शुरू हो जाएगी तो क्या वह दिन इस आयत और इस हदीस को सत्यापित करने वाला न होगा? (और अब देखें कि इस ज़माने में वह शुरू भी हो चुकी है) अवश्य होगा और सारे उस दिन बोल उठेंगे कि आज वह पेशगोई मक्का और मदीना के बीच खुले-खुले तौर पर पूरी हो गई। हाय अफ़सोस इन नाम के मुसलमानो पर! जो (मुझसे ईर्ष्या-द्वेष के कारण) नहीं चाहते कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई पेशगोई पूरी हो। (चश्मा-ए-मारिफ़त, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-23 पृ. 81-82 हाशिया)

क़ुर्आन और हदीस से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत सी निशानियाँ और पेशगोइयाँ प्रस्तुत की हैं और साबित किया है कि यह ज़माना मसीह मौऊद के आने का ही ज़माना है।

इन सबको विस्तारपूर्वक बयान करना इस समय सम्भव नहीं। बहरहाल यह पेशगोई पेश करने के बाद

आपने फ़रमाया:- कि वह आने वाला मसीह मौऊद मैं ही हूँ। अत: आप फ़रमाते हैं:-

''मैं घोषणापूर्वक कहता हूँ कि मेरा मसीह मौऊद होने का दावा इसी शान् का है कि हर एक पहलू से चमक रहा है। पहले इस पहलू को देखो कि मेरा दावा ख़ुदा की ओर से होने का और लगभग सत्ताईस वर्ष से ख़ुदा से इल्हाम और संवाद पाने का है। अर्थात् इस समय से भी बहुत पहले से है कि जब बराहीन अहमदिया अभी पूरी तरह संकलित नहीं हुई थी और फिर बराहीन अहमदिया के समय में वह दावा उसी किताब में लिखकर प्रकाशित किया गया जिसको लगभग चौबीस साल गुज़र गया है। अब बुद्धिमान व्यक्ति समझ सकता है कि झूठ का सिलसिला इतना लम्बा नहीं चल सकता और कोई व्यक्ति चाहे कितना ही झूठा हो वह इतने लम्बे समय तक जिसमें एक बच्चा भी पैदा होकर बाप बन सकता है स्वभावत: ऐसी दुष्टता नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त इस बात को कोई बुद्धिमान स्वीकार नहीं करेगा कि एक व्यक्ति लगभग सत्ताईस वर्ष से ख़ुदा तआला पर आरोप लगाता है और हर एक सुबह अपनी ओर से इल्हाम (ईशवाणी) बनाकर और पेशगोइयाँ रचकर ख़ुदा तआला की ओर मन्सूब करता है और हर एक दिन यह दावा करता है कि ख़ुदा तआला ने मुझे यह इल्हाम (ईशवाणी) किया है और ख़ुदा तआला का यह कलाम (वाणी) है जो मुझ पर उतरा है। जबकि ख़ुदा तआला जानता हो कि वह इस बात में झूठा है। न उसको कभी इल्हाम हुआ और न ख़ुदा तआला उससे हमकलाम हुआ। और ख़ुदा उसको एक लानती व्यक्ति समझता है मगर फिर भी उसकी सहायता करता है। यह सब कुछ होने के बावजूद झूठा है तब भी अल्लाह तआला उसकी सहायता करता है और उसकी जमाअत को तरक़्क़ी देता है। अजीब बात है। और उन तमाम् षडयन्त्रों और मुसीबतों से उसे बचाता है जो दुश्मन उसके लिए तय करते हैं। क्या यह अजीब बात नहीं?

फिर एक और दलील है जिससे मेरी सच्चाई चमकते हुए सूरज की तरह स्पष्ट हो जाती है और मैं ख़ुदा की ओर से हूँ इस बात का प्रमाण अपनी पराकाष्ठा को पहुँचता है और वह यह है कि उस ज़माने में जब मुझे कोई भी नहीं जानता था अर्थात् बराहीन अहमदिया के ज़माने में, जब मैं एक एकान्त में इस किताब को लिख रहा था और उस ख़ुदा के अतिरिक्त जो अन्तर्यामी है मेरी हालत से कोई परिचित न था तब उस ज़माने में ख़ुदा ने मुझे मुख़ातिब करके कुछ पेशगोइयाँ फ़रमायीं जो उसी एकान्तवास और ग़रीबी के ज़माना में बराहीन अहमदिया में छपकर सारे देश में प्रकाशित हो गईं।

(लैक्चर लाहौर, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-20 पृ. 188-189)

अल्लाह तआला के समर्थनों और सहायताओं का वर्णन

आज यहाँ दुनिया भर से आए हुए लोग जो क़ादियान में बैठे हुए हैं और पूरी दुनिया में जो अहमदी इस जलसा को देख रहे हैं और सुन रहे हैं क्या यह सब अल्लाह तआला के समर्थनों के प्रमाण नहीं? क्या झूठे दावे करने वाले को यह शोहरत मिलती है कि सारी दुनिया में उसके नाम का नारा लगाया जाता है और एक सौ तीस साल से अधिक समय से (बल्कि अब तो एक सौ चौंतीस साल हो गए हैं) चढ़ने वाला सूरज हर दिन जमाअत अहमदिया की तरक़्क़ी की ख़ुशख़बरी लेते हुए निकलता है। हे अहमदियत की मुख़ालिफ़त करने वालो! कुछ तो अक़्ल से काम लो।

अल्लाह तआला के समर्थनों का वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:-

मुझ पर जो मेरी क़ौम तरह-तरह के आरोप लगाती है मुझे उनके आरोपों की कुछ भी परवाह नहीं, और घोर अन्याय होगा यदि मैं उनसे डरकर सच्चाई की राह को छोड़ दूँ। और ख़ुद इनको सोचना चाहिए कि एक व्यक्ति को ख़ुदा ने अपनी ओर से दूरदर्शिता प्रदान की है और स्वयं उसको सन्मार्ग दिखला दिया है और उसको अपने वार्तालाप और सम्बोधन का सौभाग्य प्रदान किया और उसके सत्यापन के लिए हज़ारों निशान किए हैं, फिर किस तरह एक मुख़ालिफ़ की कल्पनाओं को कुछ चीज़ समझकर उस सत्यनिष्ठ से मुँह फेर सकता है (जिसे ख़ुद चुना है)। और मुझे इस बात की भी परवाह नहीं कि अन्दरूनी और बेरूनी (अर्थात् मुसलमान और अन्य) मुख़ालिफ़ मेरी नुक्ताचीनी में लगे हैं। क्योंकि इससे भी मेरी करामत ही साबित होती है। ....यदि हर प्रकार का दोष मेरे अन्दर है और उनके कथनानुसार मैं वचन तोड़ने वाला और झूठा और दज्जाल और मनगढ़त बातें बनाने वाला और बेईमान हूँ और हरामख़ोर हूँ और क़ौम में फ़ूट डालने वाला और फ़ित्ना फैलाने वाला हूँ और दुश्चरित्र और दुराचारी हूँ और ख़ुदा पर लगभग तीस साल से मनगढ़त बातें बनाने वाला हूँ और नेकों एवं सत्यनिष्ठों को गालियाँ देने वाला हूँ और मेरे अन्दर धृष्टता, बुराई, व्यभिचार और स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं, और केवल दुनिया के ठगने के लिए मैंने एक दूकान बनाई है, और नऊज़ुबिल्लाह (ख़ुदा की पनाह) उनके कथनानुसार मेरा ख़ुदा पर भी ईमान नहीं, और दुनिया का कोई दोष नहीं जो मुझमें नहीं, मगर इन बातों के बावजूद जो तमाम दुनिया के ऐब (दोष) मुझमें मौजूद हैं और हर एक प्रकार का अन्याय जो मेरे अन्दर भरा हुआ है और बहुतों के मैंने बेईमानी से धन हड़प लिए और बहुतों को मैंने (जो फ़रिश्तों की तरह निष्पाप थे) गालियाँ दी हैं। (वस्तुत: यह वे पाखण्ड़ी और दिखावटी लोग हैं जो अपने आप को नेक समझते हैं यह नहीं कि सचमुच निष्पाप थे बल्कि अपने आप को फ़रिश्तों की तरह निष्पाप समझते थे)। और हर एक बदी और ठगबाज़ी में सबसे बढ़कर हिस्सा लिया। तो फिर इसमें क्या भेद है कि बद् और बदकार और बेईमान और झूठा तो मैं था, मगर मेरे मुक़ाबिल पर जब हर एक फ़रिश्ता जैसा आया तो वही मारा गया, जिसने मुबाहला (अभिशाप) किया वही तबाह हुआ, जिसने मुझ पर बद्दुआ की वह बद्दुआ उसी पर पड़ी। जिसने मुझ पर कोई मुकदमा न्यायालय में दायर किया उसी ने पराजय का मुँह देखा.....चाहिए तो यह था कि ऐसे मुक़ाबला के समय मैं ही तबाह होता, मेरे पर ही बिजली गिरती, बल्कि किसी को मुक़ाबले पर खड़े होने की भी आवश्यकता न थी, क्योंकि कि मुजरिम का स्वयं ख़ुदा दुश्मन है। इसलिए ख़ुदा के लिए सोचो कि यह उलटा असर क्यों ज़ाहिर हुआ, क्यों मेरे मुक़ाबले पर नेक मारे गए, और हर एक मुक़ाबले में ख़ुदा ने मुझे बचाया (अर्थात् नेक मारे गए से तात्पर्य वे केवल दिखावटी नेक हैं), क्या इससे मेरी करामत साबित नहीं होती? ''यह भी तो करामत साबित होती है। मैं इतना बुरा था इसके बावजूद अल्लाह तआला मेरी सहायता कर रहा है। इसलिए यह कृतज्ञता (एहसानमन्दी) का स्थान है कि जो दोष मुझ पर लगाए जाते हैं वे भी मेरी करामत ही साबित होती हैं।''

(हक़ीक़तुल् वह्यी, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द-22 पृ. 2)

(शेष ....)

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

SAKTI BALM

INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHESAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIFE PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM
Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller

Specialist in Teddy Bear Ladies & Kids items, All Types of Bags & Garments items

Mob: 9647960851
9082768330

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

INDIA MOVES ON EXIDE

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

METRO PLASTIC PRODUCTS

YUBA

QUALITY FOOTWEAR

E-mail:yuba.metro@yahoo.com

{AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}

H&O & FACTORY :20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
KOLKATA700015,PH:2328-1016

Fawad Anas Ahmed

GOLDEN GROUP REAL ESTATE

दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

इस्लाम में जंग का कारण धर्म का प्रसार या आत्म-रक्षा ?

लेखक : शाह हारून सैफी, मुबल्लिग़ सिलसिला

इस्लाम धर्म समस्त मानवजाति के उद्धार, कल्याण, आपसी प्यार मुहब्बत, भाईचारे और शान्ति का सन्देश देता है परन्तु इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अनभिज्ञ लोग अज्ञानतावश बार-बार यह प्रश्न उठाते हैं कि यदि इस्लाम एक शान्तिप्रिय धर्म है तो इस्लाम ने अपने उत्थान एवं प्रचार व प्रसार के लिए तलवार का सहारा क्यों लिया और क्यों इस्लाम ने जंगे लड़ीं? इसका उत्तर यह है कि इस्लाम ने कभी भी अपने प्रचार प्रसार के लिए किसी भी प्रकार के अत्याचार का न तो आदेश दिया है और ना ही उसे उचित ठहराया है। जब हम इस्लामी इतिहास का अध्ययन करते हैं तो हमें ज्ञात होता है कि वह क्या कारण थे जिनकी वजह से इस्लाम को विवश होकर अपनी आत्म रक्षा और आत्म सम्मान के लिए ना कि अपने उत्थान एवं प्रसार के लिए तलवार का सहारा लेना पड़ा। जिन कारणों से इस्लाम ने अपनी आत्म रक्षा करने और तलवार उठाने का आदेश दिया उनका वर्णन करते हुए अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

" हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मक्का में और इसके पश्चात् भी काफ़िरों द्वारा कष्ट उठाया और विशेष तौर पर मक्का के तेरह वर्ष इस संकट तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार सहन करने में गुज़रे कि जिसकी कल्पना से भी रोना आता है किन्तु आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस समय तक शत्रुओं के मुकाबले पर तलवार न उठाई और न उनके कठोर शब्दों का कठोर उत्तर दिया, जब तक कि बहुत से सहाबा और प्रिय मित्र बड़ी निर्दयता से मार दिए गए तथा विभिन्न प्रकार से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी शारीरिक कष्ट दिया गया। कई बार आपको विष भी दिया गया तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वध करने के लिए कई प्रकार की योजनाएं भी बनाई गईं जिनमें शत्रुओं को निराशा हाथ लगी। जब ख़ुदा के प्रतिशोध का समय आया तो ऐसा हुआ कि मक्का के समस्त रईसों तथा जाति के प्रमुख लोगों ने एकमत होकर यह निर्णय किया कि इस व्यक्ति का बहरहाल वध कर देना चाहिए। उस समय ख़ुदा ने जो अपने प्रियजनों, सिद्दीक़ों (सत्यनिष्ठों) तथा ईमानदारों का समर्थक होता है आप को सूचना दे दी कि इस शहर में अब बुराई के अतिरिक्त कुछ नहीं और वध करने पर कटिबद्ध हैं, यहां से शीघ्र भाग जाओ। तब आप ख़ुदा के आदेश से मदीना की ओर प्रवास (हिजरत) कर गए किन्तु फ़िर भी शत्रुओं ने पीछा न छोड़ा बल्कि पीछा किया तथा इस्लाम को बहरहाल पैरों तले रोंदना चाहा। जब उन लोगों की धृष्टता इस सीमा तक बढ़ गई और कई निर्दोषों का वध करने के अपराध ने भी उनको दण्ड-योग्य बनाया तब उनके साथ लड़ने के लिए प्रतिरक्षा तथा स्वयं की रक्षा के तौर पर अधिकृत आज्ञा दी गई।"(1)

अत: अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुरआन में फ़रमाया :

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَى نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ (40) الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ(2)

अर्थात उन लोगो को जिनके विरुद्ध युद्ध किया जा रहा है (युद्ध करने की) अनुमति दी जाती है क्योकि उनपर अत्याचार किया गया और निश्चित रुप से अल्लाह उनकी सहायता करने पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है। (अर्थात) वे लोग जिन्हे उनके घरो से अन्यायपूर्वक निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है। और यदि अल्लाह की ओर से उनमें से कुछ को कुछ अन्यों से भिड़ा कर लोगो का बचाव ना किया जाता तो मठ और गिरजे और यहूदियों के उपासनाग्रह तथा मस्जिदें भी ध्वस्त कर दी जाती जिनमें अधिकतापूर्वक अल्लाह का नाम लिया जाता है और अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा जो उसकी सहायता करता है। नि:संदेह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है।

उपरोक्त आयतों में निम्नलिखित बातें चिंतन करने योग्य हैं।

1) मुसलमानों को जंग करने की आज्ञा इस आधार पर दी गई क्योंकि उन पर अत्याचार किया गया और बिना कारण उन्हें उनके घरो से निकाला गया। यानि प्रतिरक्षा के तौर पर अर्थात् अपनी स्वायत्तता की रक्षा के तौर पर।

2) मुसलमानों पर यह अत्याचार इसलिए किया गया क्योकि उन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब है अर्थात मुसलमानों पर धर्म के आधार पर अत्याचार किया गया ना कि मुसलमानों ने धर्म के आधार पर अत्याचार किया।

3) इस्लाम के तलवार उठाने का एक कारण धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करना था। जैसे की फ़रमाया, यदि अल्लाह की ओर से उनमें से कुछ को कुछ अन्यों से भिड़ा कर लोगो का बचाव ना किया जाता तो मठ और गिरजे और यहूदियों के उपासना ग्रह तथा मस्जिदें भी ध्वस्त कर दी जाती जिनमें अधिकतापूर्वक अल्लाह का नाम लिया जाता है।

उपरोक्त आयत से स्पष्ट है कि अल्लाह तआला ने जंग करने का आदेश आत्मरक्षा के लिए दिया है न कि इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए और यदि पवित्र कुरआन, हदीस और इतिहास की समस्त पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देखा जाए और जहां तक इंसान के लिए संभव है चिंतन से पढ़ा या सुना जाए तो इतनी विस्तृत जानकारियों के पश्चात् ठोस विश्वास के साथ ज्ञात होगा कि यह आपत्ति कि इस्लाम ने धर्म को बल प्रयोग फैलाने के लिए तलवार उठाई है नितान्त निराधार तथा लज्जाजनक आरोप है और यह उन लोगों का विचार है जिन्होंने पक्षपात एवं द्वेष भावना से अलग होकर क़ुरआन, हदीस तथा इस्लाम के विश्वसनीय इतिहासों को नहीं देखा बल्कि झूठ और लांछन लगाने से पूरा-पूरा काम लिया है।

इसी प्रकार अल्लाह तआला फरमाता है कि :

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدَءُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (3)

क्या तुम ऐसे लोगो से युद्ध नहीं करोगे जो अपनी क़समों को तोड़ बैठे हों और रसूल को (देश से) निकाल देने का संकल्प किए हुए हों और वही हैं जिन्होंने पहले पहल तुम पर (अत्याचार) का आरम्भ किया। क्या तुम उनसे डर जाओगे यदि तुम मोमिन हो तो अल्लाह अधिक हक़दार है कि तुम उससे डरो।

उपरोक्त आयत से भी स्पष्ट है की पहले पहल इस्लाम के दुश्मनों की ओर से इस्लाम को मिटाने के असफल प्रयास किए गए उसके बाद अपनी आत्म रक्षा और अपने अस्तित्व के लिए इस्लाम ने जंग का मार्ग अपनाया। इसके अतिरिक्त जिस प्रकार हर समय इस्लाम को हानि पहुँचाने के असफल प्रयास किए जाते थे और कोई अवसर मुसलमानों और इस्लाम को मिटाने का हाथ से न जाने दिया जाता था उसका वर्णन करते हुए अल्लाह त आला पवित्र क़ुरआन में फरमाता है

كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ (4)

कैसे (उनकी बात भरोसे योग्य) हो सकती है जब्कि परिस्तिथि यह है कि यदि वे तुम पर विजयी हो जाएं तो तुम से सम्बन्धित किसी वचन अथवा कर्तव्य की परवाह नहीं करते। (केवल) वे तुम्हें अपने मुँह की बातों से प्रसन्न कर देते हैं जबकि उनके दिल (उन बातों के) इन्कारी होते हैं और उनमें से अधिकतर दुराचारी लोग हैं।

इसी प्रकार फ़रमाया : (5) لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ

किसी मोमिन के विषय में वे न किसी प्रतिज्ञा की परवाह करते हैं और ना किसी उत्तरदायित्व की और यही लोग सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।

उपरोक्त आयत से स्पष्ट है कि किस प्रकार इस्लाम के शत्रु मोहम्मद स अ व और इस्लाम को ख़त्म करने के लिए हर समय तैयार रहते थे और अपने वचनों, संधियों और प्रतिज्ञाओं को भी तोड़ देते थे जो उन्होंने मुसलमानों के साथ की होती थीं।

इसके विपरीत इस्लाम ने जिस पवित्र शिक्षा का वर्णन किया है और मुसलमानों को अपनी संधियों और वचनों को पूरा करने के लिए जो आदेश दिया है वह भी आपके समक्ष प्रस्तुत है अल्लाह तआला फरमाता है :

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (6)

और यदि वह सन्धि के लिए झुक जाएँ तो तू भी उसके लिए झुक जा और अल्लाह पर भरोसा कर। नि:संदेह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

इसी प्रकार वर्णन है कि :

لَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَى مُدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (7)

मुश्रिकों में से ऐसे लोगों को छोड़ कर जिनके साथ तुमने समझौता किया फिर उन्होंने तुमसे कोई वादा खिलाफी नहीं की और तुम्हारे विरुद्ध किसी और की सहायता भी नहीं की। अत: तुम उनके साथ समझौते को तय की हुई अवधि तक पूरा करो। नि:संदेह अल्लाह मुत्तक़ियों से प्रेम करता है।

इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

इस्लाम ने तय किया है कि जो व्यक्ति उस गैर मुस्लिम को क़त्ल करेगा जिस से संधि हो चुकी है वह स्वर्ग की खुशबु से वंचित रहेगा जबकि स्वर्ग की खुशबु चालीस वर्ष की दूरी तक पहुँचती है।(8)

हदीस में वर्णन है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: सुनो! जो किसी ऐसे गैर मुस्लिम पर अत्याचार करे जिससे संधि हो या उसके अधिकार में कमी करेगा या उसकी ताकत से अधिक दु:ख देगा या उसकी कोई वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध लेगा तो मै क़यामत के दिन उसकी ओर से दावेदार बनूँगा। (9)

क्या इस्लाम समस्त काफिरों को क़त्ल करने का आदेश देता है ?

विस्तारपूर्वक वर्णन हो चुका है कि इस्लाम की शिक्षा समस्त मानवजाति के कल्याण उनके साथ प्रेम आपसी भाईचारे और शान्ति का आदेश देती है। इसी प्रकार मुसलमान समस्त प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध गैर मुस्लिमों के साथ रखते थे और किसी भी स्थिति में इस्लाम ने धर्म, समुदाय या रंग व नस्ल के आधार पर भेदभाव की शिक्षा नहीं दी। इस्लाम ने केवल आत्म रक्षा के लिए मुसलमानों को जंग करने की अनुमति दी। जिससे यह प्रमाणित होता है कि यह झूठा आरोप कि इस्लाम समस्त काफिरो को क़त्ल करने का आदेश देता है यह उन लोगों का विचार है जिन्होंने पक्षपात एवं द्वेष भावना से अलग होकर क़ुरआन, हदीस तथा इस्लाम के विश्वसनीय इतिहासों को नहीं देखा बल्कि झूठ और लांछन लगाने से पूरा-पूरा काम लिया है। अत: वह काफ़िर जिन्होंने मुसलमानों पर अत्याचार नहीं किए और न ही मुसलमानों से धर्म के आधार पर शत्रुता की उनके विषय में अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फरमाता है

لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ (10)

अर्थात अल्लाह तुम्हें उनसे भलाई और न्यायपूर्ण व्यवहार करने से मना नहीं करता जिन्होंने तुमसे धार्मिक विषय में युद्ध नहीं किया। और न तुम्हें निर्वासित किया। निसंदेह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है।

इसी प्रकार अल्लाह तआला फरमाता है :

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ (11)

अर्थात यदि मुशरिकों में से कोई तुझसे शरण मांगे तो उसे शरण दे। यहाँ तक कि वह अल्लाह की वाणी सुन ले फिर उसे उसके सुरक्षित स्थान तक पहुँचा दे। यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो

ज्ञान नहीं रखते।

इसी प्रकार वर्णन हो चुका है कि मुसलमान अपने गैर मुस्लिम रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करते थे अत: वर्णन मिलता है कि :

हज़रत इब्न-ए-अब्बास रज़ि फरमाते हैं कि "सहाबा अपने ग़ैर मुस्लिम रिश्तेदारों के साथ अच्छा व्यवहार करना पसन्द नहीं करते थे फ़िर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इस विषय में प्रश्न किया गया तो अल्लाह तआला ने यह आयत उतारी :

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ وَمَا تُنْفِقُوْنَ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ

उनको हिदायत देना तेरा दायित्व नहीं, परन्तु अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है और जो भी धन तुम खर्च करो तो वह तुम्हारे अपने ही हित में है जब्कि तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के सिवा (कभी) खर्च नहीं करते और जो भी तुम धन में से खर्च करो वह तुम्हें भरपूर वापस कर दिया जाएगा और तुम पर कदापि कोई भी अत्याचार नहीं किया जाएगा।(12)

अर्थात एक ओर इस्लाम के वे शत्रु हैं जो प्रत्येक क्षण इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को मिटाने के लिए तैयार रहते थे और अपने इस असफ़ल प्रयास में अपनी प्रतिज्ञाओं, संधियों और वचनों को भी तोड़ देते थे। दूसरी ओर इस्लाम है जो प्रत्येक स्थिति में न्याय को अपने समक्ष रखने और अपनी प्रतिज्ञाओं और संधियों को पूरा करने का आदेश देता है। इसके बावजूद कि इस्लाम और मुसलमानों पर निरन्तर आक्रमण हुए उन पर अत्याचार किया गया इस्लाम ने इन जंगो में जो आदेश दिए वर्तमान काल में सभ्य से सभ्य देश या समुदाय भी उसका उदाहरण प्रस्तुत करने में असफ़ल है और रहेगा।

उदाहरण के तौर पर :

1) इस्लाम ने जंग में पहल करने से रोका। (13)

2) अत्याचार करने से रोका। (14)

3) उस समय तक जंग की आज्ञा दी जब तक उपद्रव समाप्त न हो जाए। (15)

4) शरण में आने वाले गैर मुस्लिमों को शरण देने एवं शान्ति प्रदान करने का आदेश दिया। (16)

5) यदि शत्रु स्वयं को कमज़ोर समझ कर सन्धि करने का आग्रह करें तो सन्धि करने का आदेश दिया। (17)

6) किसी भी बुराई का बदला केवल इतना लेना है जितनी बुराई की गई है। (18)

7) शत्रुओ से भी न्याय करने का आदेश दिया। (19)

8) शत्रुओ की स्त्रियों , बच्चों और अपंग लोगो को मारने से रोका। (20)

9) शत्रुओ की फसलों और फलदार पेड़ो को काटने से मना किया। (21)

10) धार्मिक स्थलों को तोड़ने या धार्मिक पेशवाओं को क़त्ल करने से मना किया। (22)

11) धार्मिक भावनाओं का आदर किया और धार्मिक त्योहारों के समय जंग ना करने का आदेश दिया। (23)

12) शत्रुओं की लाशों को नुकसान पहुंचाने (कान नाक काटने) से मना किया। (24)

इस्लाम की इस शान्तिप्रिय और न्याय से परिपूर्ण शिक्षा के होते हुए क्या कोई बुद्धिमान व्यक्ति इस्लाम पर यह आरोप लगा सकता है कि इस्लाम अन्याय या अत्याचार की शिक्षा देता है ? कदापि नहीं। यही कारण है कि जब मुसलमानों ने "शाम" (सीरिया) देश पर विजय प्राप्त की तो मुसलमानों ने शाम के वासियों से जो कि ईसाई थे टेक्स वसूल किया था, थोड़े समय के बाद रोमी साम्राज्य की ओर से जंग का भय हुआ जिस पर शाम के इस्लामी राजदूत हज़रत अबू उबैदा र.अ. ने समस्त टेक्स ईसाइयों को वापिस कर दिया और कहा कि जंग के कारण जब्कि हम तुम्हारे हक़ अदा नहीं कर सकते (अर्थात तुम्हारी सुरक्षा नहीं कर सकते) तो हमारे लिए उचित नहीं कि यह टेक्स अपने पास रखें। ईसाइयों ने यह देख कर मुसलमानों को दुआ दी कि तुम रोमियों पर विजय प्राप्त करो और फिर से इस देश के हाकिम बनो। (25)

वर्तमान काल और जिहाद

इस्लामी शिक्षा की रौशनी में इस बात का विस्तारपूर्वक वर्णन हो चुका है कि इस्लाम प्यार, मुहब्बत और अमन का धर्म है। और प्रेम सबके साथ और घृणा किसी से नहीं इस्लाम की शिक्षा का सार है। और जो भी जंगे लड़ी गयी वो आत्मरक्षा एवं धार्मिक स्वतंत्रता स्थापित करने के लिए लड़ी गयी क्योकि उस समय इस्लाम को तलवार से ख़त्म करने का प्रयास किया गया इसलिए इस्लाम ने भी अपनी रक्षा के लिए तलवार उठाई परन्तु वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति को सम्पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त है और यदि किसी व्यक्ति को उसके धर्म या जाती के आधार पर प्रताड़ित किया जाता है तो उसे न्याय दिलाने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय क़ानून मौजूद हैं जिनके द्वारा अत्याचारी के विरुद्ध क़ानूनी करवाई की जा सकती है इसलिए वर्तमान समय में इस्लाम हथियार उठाने की कदापि आज्ञा नहीं देता क्योंकि इस्लाम अपने देश और उसके संविधान के विरुद्ध किसी भी प्रकार की गतिविधि को उचित नहीं ठहराता और किसी भी प्रकार की बगावत या उपद्रव को पसन्द नहीं करता। और स्वयं हज़रत मोहम्मद सअव० ने ये भविष्यवाणी की थी कि एक समय आएगा जब धार्मिक युद्धों की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। जैसा कि फ़रमाया :

عن النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يُوشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ أَنْ يَلْقَى عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ إِمَامًا مَهْدِيًّا وَحَكَمًا عَدْلًا فَيَكْسِرُ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيرَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ وَتَضَعُ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا

यानि मुहम्मद स. अ. व. ने फ़रमाया कि सम्भव है कि तुम में से जो जीवित रहे वह ईसा इब्न मरयम से मिले जो इमाम महदी भी होगे और हकम (फैसला करने वाले) और आदिल (न्याय करने वाले) होंगे। वह सलीब को तोड़ेगे और सूअर को क़त्ल करेंगे और जिज़्या को ख़त्म कर देंगे और जंग अपने हथियार डाल देगी। यानि धार्मिक जंगो का अंत हो जाएगा। (26)

अत: अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

अलैहिस्सलाम ने 1889 ई में ईश्वर से सन्देश प्राप्त करके यह घोषणा की कि आप वही इमाम महदी और मसीह मौऊद हैं जिसकी भविष्यवाणी हज़रत मोहम्मद सअव० ने 1400 वर्ष पूर्व की थी। और आपने हज़रत मोहम्मद स अ व की भविष्यवाणी के अनुसार अल्लाह से सन्देश प्राप्त करके यह घोषणा की कि :

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तो ख्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल
अब आ गया मसीह जो दीन का इमाम है
दीन की तमाम जंगों का अब इख्तताम है।(27)

अंत में हम अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हमें सत्य एवं निष्ठा के मार्ग पर चलते हुए पक्षपात से मुक्त होकर इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का अध्ययन करने और समझने की शक्ति प्रदान करे और समस्त धर्म और समस्त समुदाय मिलकर एक दूसरे की धार्मिक आस्थाओं का सम्मान करने और प्रेम, शान्ति और आपसी भाईचारे के मार्ग पर चलते हुए ऐसे वातावरण की स्थापना करने वाले हों जिससे हमारा देश समृद्ध एवं शक्तिशाली बने। आमीन

हवालाजात/ References :

1) मसीह हिन्दुस्तान में पृष्ठ 10,11
2) सूरह: अल-हज आयत - 40, 41
3) सूरह: अत् - तौबा आयत 13
4) सूरह: अत् - तौबा आयत 8
5) सूरह: अत् - तौबा आयत 10
6) सूरह: अल - अनफाल आयत 62
7) सूरह: अत्-तौबा आयत 4
8) तफ़्सीर इब्न-ए-कसीर 2/289
9) मिश्क़ात शरीफ़ पृष्ठ 354
10) सूरह: अल-मुम्ताहिना आयत 8
11) सूरह: अल- तौबा आयत 6
12) तफ़्सीर इब्न-ए-कसीर,सुरह बक़र: आयत 273
13) सूरह: अल-बकरा : आयत 191
14) सूरह: अल-बकरा : आयत 190
15) सूरह: अल-बकरा : आयत 194
16) सूरह: अत् - तौबा : आयत 36
17) सूरह: अल - अनफाल : आयत 62
18) सूरह: अल - शूरा: आयत 41
19) सूरह: अल - मयदा : आयत 9
20) तारीख इब्न खुल्दून 2 / 489
21) तारीख इब्न खुल्दून 2 / 489
22) तारीख इब्न खुल्दून 2 / 489
23) सूरह: अल - बकरा : आयत 192
24) सुनन इब्न माजा किताबुल-जिहाद
25) अबू-युसूफ किताबुल-खराज पृष्ठ 80-82
26) मुसनद अहमद किताब बाक़ी मुसनद अल-मुक़स्सिरीन
27) रूहानी खज़ाइन जिल्द 17 पृष्ठ 77,78

LUCKY BATTERY CENTRE
BATTERY & DIGITAL INVERTER
Thana Chhak, NH-5 Soro
Balasore, Odisha
Pin 756045
e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
Mob. : 09438352786, 06788221786

Prop.
Sk. Riyazuddin
Moblie: 9437188786
9556122405
KING TENT HOUSE
At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

Prop : Sk. Ishaque
FFT Fruits
Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653
FAIZAN FRUITS TRADERS
Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045
PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad
Mobile
09937238938
محبت سب کے لئے نفرت کسی سے نہیں
RUKSAR AGENCY
Pran Juice, Gandour Food Products,
Monginis Cake, Raja Biscuit etc.
Mubarakpur, At. Soro,
Distt. Balasore (Odisha)

REHAN'S
REHAN INTERNATIONAL
WE ARE ON
snapdeal
flipkart
amazon.com
paytm
Ph: 7702857646
rehaninternational@gmail.com
We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com
DECO
DL
LEATHERS
Genuine Quality
We Undertake Complimentary Orders Also
Manufacture
Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

सामान्य ज्ञान

टीकाकरण क्या है?

टीकाकरण मानव को संक्रामक रोगों से बचाने का सबसे प्रभावशाली तरीका है। हर देश की अपनी टीकाकरण नीति होती है जो कि उसके समूचे स्वास्थ्य कार्यक्रम का अंग होती है।

भारत में टीकाकरण कार्यक्रम क्या है?

भारत में राष्ट्रीय कार्यक्रम का उद्देश्य सभी शिशुओं को छः जानलेवा बीमारियों तपेदिक, पोलियो, गलघोंटू, काली खांसी, टिटनेस और खसरे से सुरक्षा प्रदान करता है। शिशु को खसरे के टीके के साथ विटामिन ए ड्रॉप्स भी दी जाती है। 2002-2003 से देश के कुछ चुने हुए शहरों में हैपेटाइटिस बी के टीके को भी इस कार्यक्रम में शामिल कर लिया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत एक वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों को छः जानलेवा बीमारियों से बचाने के लिये उनका टीकाकरण किया जाता है। इस टीकाकरण कार्यक्रम में सभी गर्भवती महिलाओं को टिटनेस से बचाव के टीके लगाना भी शामिल है।

गर्भवती महिलाओं को कौन से टीके लगाये जाते हैं यह टीके कब लगाये जाते हैं?

गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान जल्दी से जल्दी टिटनेस टॉक्साइड(टीटी) के दो टीके लगाये जाने चाहिए। इन टीकों को टीटी1 और टीटी2 कहा जाता है। इन दोनों टीकों के बीच चार सप्ताह का अन्तर रखना आवश्यक है। यदि गर्भवती महिला पिछले तीन वर्ष में टीटी के दो टीके लगवा चुकी है तो उसे इस गर्भावस्था के दौरान केवल बूस्टर टीटी टीका ही लगवाना चाहिए।

यदि गर्भवती महिला गर्भावस्था के दौरान देर से अपना नाम दर्ज कराए तब भी क्या उसे टीटी के टीके लगाए जाने चाहिए?

जी हाँ, टीटी का टीका माँ और बच्चे को टिटनेस की बीमारी से बचाता है। भारत में नवजात शिशुओं की मौत का एक प्रमुख कारण जन्म के समय टिटनेस का संक्रमण होना है। इसलिए अगर गर्भवती महिला टीकाकरण के लिये देर से भी नाम दर्ज कराये तो भी उसे टीटी के टीके लगाए जाने चाहिए। किन्तु टीटी2 (या बूस्टर टीका) टीका प्रसव की अनुमानित तारीख से कम से कम चार सप्ताह पहले दिया जाना चाहिए। ताकि उसे उसका पूरा लाभ मिल सके।

शिशु के टीकाकरण की शुरूआत कब से होनी चाहिए?

टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार अस्पताल या किसी संस्थान में जन्म लेने वाले सभी शिशुओं को जन्म लेते ही या अस्पताल छोड़ने से पहले बीसीजी का टीका, पोलियों की जीरो खुराक और हैपेटाइटिस बी का टीका लगा दिया जाना चाहिए किसी अस्पताल या संस्थान में जन्म लेने वाले शिशुओं को डीटीपी का पहला टीका, पोलियो की पहली खुराक, हैपेटाइटिस बी का पहला टीका और बीसीजी का टीका डेढ माह (6 सप्ताह) का होने पर दिया जाता है। ढाई महीने (10 सप्ताह) का होने पर शिशु को डीपीटी का दूसरा टीका, पोलियो की दूसरी खुराक और हैपेटाइटिस बी का टीका देना ज़रूरी है।

Sayed K. A. Rihan, M.B.A.
Proprietor
Tel: 9035494123/9740190123

B.M.S.ENTERPRISES

INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS

21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road,
Mahadevapura, Bangalore - 560 048
E-mail: bmsentrprises@gmail.com

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E & C.C.E are available here. Also available books for childrens & supply retail and wholesale for schools

Urdu Chowk, Tarapur, Munger, Bihar 813221

NASIR MAHMOOD
Ph. : 9330538771
7686979536

MANUFACTURER and WHOLE SELLER

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag, Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.

70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hameed Khan Beejali

Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

Ziyafat Khan
Mobile
09937845993

Love For All Hatred For None

दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq
Eajaz-ul-Haq
Anwar-ul-Haq
Rizwan-ulHaq

Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt, Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

पत्रिका के बारे में कृपया अपनी राय (Feedback) अवश्य दें

प्रिय पाठको! धार्मिक भेद-भाव तथा धर्मों के बीच पनप रही नफरत के वर्तमान परिदृश्य में पत्रिका "**राहे ईमान**" के द्वारा हम निरंतर इस्लाम की वास्तविक तथा मौलिक शिक्षाओं से आपको अवगत कराने का प्रयास कर रहे हैं। इस पत्रिका को पढ़कर आपको कैसा लगा, हमारे संपादकीय मंडल की ओर से जो लेख इस पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं उनके प्रति आपकी क्या राय है? यह हमें अवश्य बताएं। आपका **फ़ीडबैक (प्रतिक्रिया)** इस पत्रिका को लाभदायक तथा ज्ञानवर्धक बनाने में हमारी सहायता करेगा।

यदि आपके पास कोई ऐसा सुझाव हो जो इस पत्रिका को और भी बेहतर बना सकता है तो ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत (जमाअत के अंतर्गत नौजवानों की संस्था) आपके सुझाव का स्वागत करती है। हमारा इस पत्रिका को बेहतर से बेहतर तथा ज्ञान वर्धक एवं ईमान वर्धक बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है। इसके अतिरिक्त भी यदि पत्रिका से संबंधित और भी कोई सुझाव या परामर्श आप हमें देना चाहते हैं तो उसका हृदय से स्वागत है।

आप अपना फ़ीडबैक हमें मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत की ईमेल आईडी पर भिजवा सकते हैं और एडिटर या मैनेजर को फोन भी कर सकते हैं :-

Email id- khuddam@qadian.in

Manager- 98156-39670, Editor- 91150-40806

LIYAKAT ALI
Ph. 9899221402
9899221457
FENLEYROSH
Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.
Frequentideas Group City Quay
Liverpool L3 4fD United Kingdom
c-5/1015.2ndfloor,
opposite CISF Group Center
New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37
011-3231790
www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com